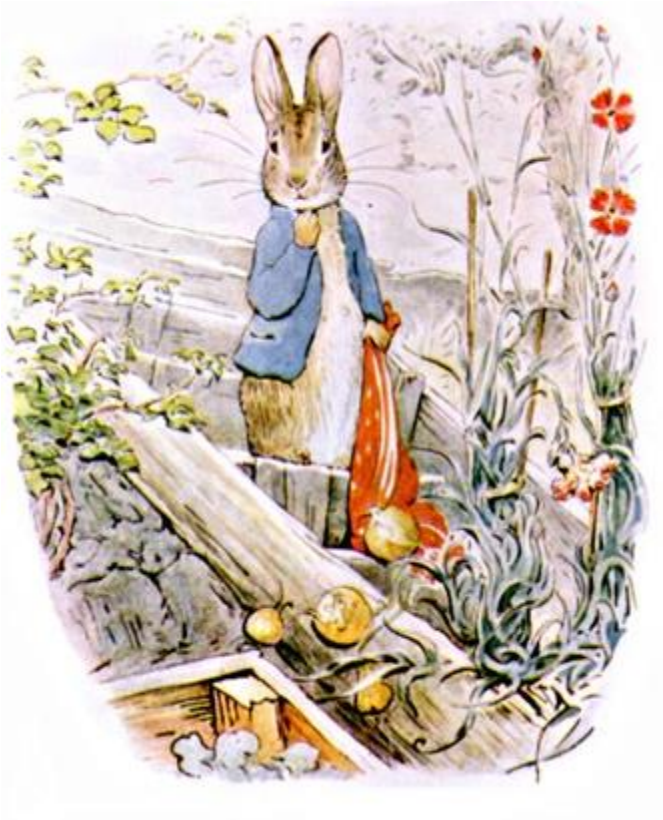

THE TALE OF
PETER RABBIT

BEATRIX POTTER

हिंदी अनुवाद - कुशल गोखले

एक वक़्त की बात है - चार खरगोश थे। उनके नाम थे - सोनू, मोनू, टीनू और बंटी। वे चार उनकी माता के साथ एक नदी किनारे एक बड़े वृक्ष की जड़ों में रहते थे।

'अब बच्चों, तुम लोग बहार खेलने जा सकते हो। मगर ध्यान रहे, कर्नल प्रताप के बगीचे में मत जाना। तुम्हारे पताजी का वहां अपघात हुआ थ। कर्नल प्रताप ने तुम्हारे पिता जी का समावेश एक लज़ीज़ भोजन में कर दिया। अब जाओ और खेलो', माता ने उसके बच्चों से कहा ।

और फिर माता-खरगोश ने डलिया हाँथ में लीं, और एक छाता भी, और चल पड़ी बाज़ार। बाज़ार में उन्होंने एक ब्रेड का बड़ा टुकड़ा ख़रीदा, और कुछ बन पाँव।

सोनू, मोनू और टीनू, जो अच्छे बच्चे थे, वे कुछ दूर गए और छोटे-छोटे फल इकठ्ठा करने लगे।

परन्तु बंटी जो बहुत शरारती और चंचल था, एक बगीचे में चला गया जहाँ विविध प्रकार के सब्ज़ियों की उगाई हो रही थी। गाजर, बीट, पत्ता गोभी इन सारी सब्ज़ियों से उसका दिल ललचा गया और वह भूल गया की ये कर्नल प्रताप का बगीचा है। कर्नल प्रताप के बगीचे में और भी कई सब्ज़ियां थीं। जैसे फ्रेंच बीन्स, सलाद, मूली, ककड़ी इत्यादि। बंटीने सबसे पहले कुछ गाजर खाए, फिर थोड़ी सी गोभी, और फिर थोड़ी सी मूली। यह सब खा कर वह बहुत सुस्ता गया। उसका पेट भर गया था। उसने सोचा थोड़ा सा इस बगीचे का यूँ ही टहल कर थोड़ा मज़ा लिया जाए।

लेकिन टहलते टहलते क्या हुआ? वह ककड़ी की क्यारी के पास से गुज़र ही रहा था की उसने कर्नल प्रताप को देखा। कर्नल प्रताप अपने घुटनो पर बैठ गोभी की नयी फसल के लिए बीज बो रहा था । उन्हों ने अपने पीछे झाड़ियों में कुछ कुछ हलचल महसूस की और मुड़ कर देखा तो एक नन्हा खरगोश।

प्रताप जोर से दहाड़ा - "रुकजा चोर", और उसके पीछे दौड़ने लगा ।

बंटी पूरी तरह सहमा गया और भागा। प्रताप भी उसके पीछे पीछे भागा। मज़े की बात यह है की बंटी लौटने का रास्ता भूल गया। सो उसे बगीचे के अंदर ही अंदर प्रताप को चकमा देना पड़ा। बंटी आगे, और प्रताप उसके पीछे, दोनों भाग रहे थे। बंटी इस क्यारी से उस क्यारी दौड़ता रहा। उसने अपना एक जूता गोभियों में घुमा दिया, और दूसरा जूता आलूओं में।

फिर वह और तेज़ी से भागा अपने चारों पैरों पर। भागते भागते वह एक जाली में फंस गया। वह फंस गया मुख्य तह क्योंकि उसके जैकेट के बटन उस में फंस गए। प्रताप नज़दीक आ ही रहा था की बंटी को अपना जैकेट त्यागना पड़ा। अपना जैकेट छोड़ कर वह भागा, और निकट ही स्थित एक छोटा सा भंडार-घर था, उसमें चला गया। भण्डार घर में कई औज़ार भी रखें थे। उन औज़ारों में बंटी चला गया और एक टिन के कैन में छिप गया। वो टिन का कैन छिपने के लिया एक बढ़िया जगह होती अगर उसमें पानी नहीं होता। प्रताप को पता चल गया था की बंटी इन्हीं औज़ारों में कहीं छिपा है। प्रताप ने आराम से सारी टोकरियों में देखा, मटकों में देखा, मगर उसे वह खरगोश कहीं नहीं दिखा। फिर बंटी, जो कैन के अंदर आधा भीगा छिपा हुआ था, छींक पड़ा। प्रताप को अंदाज़ा लग गया बंटी कहा छिपा है। तुरंत बंटी कैन से बहार निकला और खिड़की के ज़रिये भण्डार-घर से बहार निकला । प्रताप अब थक गया था और अपना पुराना कार्य सँभालने में लग गया। बंटी जा कर निकट खड़े एक पेड़ के पीछे चुप चाप बैठ गया। वह भी थक गया था। बंटी के जान में जान आयी जब उसने देखा की प्रताप अब उसके पीछे नहीं पड़ा है। लेकिन वह थोड़ा भी अंदाज़ा नहीं लगा पा रहा था की इस बगीचे के अहाते से बाहर कैसे निकला जाए। ऊपर से वह उस गीले कैन में छिप कर पूरी तरह भीग गया था।

कुछ समय बाद वह यहाँ-वहाँ घूमने लगा, मगर इस बार नज़रें खतरे के लिए सचेत रख कर। फिर उसे एक दरवाज़ा दिखाई दिया, परन्तु वो बंद था। और दरवाज़े के निचे से खिसकना बंटी जैसे मोटे खरगोश के लिए संभव नहीं था।

तब एक चूहा वहां से गुज़रा, अपने परिवार के लिए कुछ मटर के दाने लेकर। बंटी ने उस चूहे से बहार निकलने के रास्ते के बारे में पूछा। मगर चूहा कुछ जवाब नहीं दे पाया, उसने मटर जो अपने मुँह में ठूस रखे थे।

बंटी अब परेशानी के मारे रोने लगा। फिर कुछ देर बाद उसने सोचा कि उसे ही कुछ करना होगा। बगीचा भव्य था। निकट में ही एक हाथ-गाडी थी, छोटी सी, एक पाइये वाली। बंटी उस पर चढ़ गया और छुपके से उसने अपनी नज़र चरों ओर घुमाई। उसने देखा प्रताप कुछ ही दूर प्याज़ की क्यारी पर पौधों की सिंचाई कर रहा है। प्रताप की पींठ बंटी की ओर थी और प्रताप के पीछे था बाहर निकलने का बड़ा द्वार। बंटी तुरंत भागा। प्रताप ने बंटी को देखा। बंटी की रफ़्तार इतनी थी कि, इससे पहले प्रताप कुछ कर पाता, बंटी उस बगीचे के बड़े द्वार के कोने से खिसक गया। अब बंटी की जान में जान आयी, वो अब सुरक्षित था। प्रताप ने बंटी के जूते और उसका जैकेट अपने बिजूका को पहना दी। बगीचे से बहार निकलने के बाद बंटी भागता रहा, बिना पीछे मुड़े, जब तक वो घर नहीं पहुँचा।

वो इतना थक चूका था कि, सीधे अपने कमरे में जा कर पलंग पर गिर गया। उसकी माँ रसोई घर में जो खाना पका रही थी, बंटी के आने की आवाज़ सुन कर बहार आयी। जब माँ ने बंटी को देखा, थका हरा, मटमैला, तो वो समझ गयी कि, आज फिर उसने एक नया जैकेट खो दिया है।

शाम को बंटी सब लोगों से कुछ ख़ास मिल-जुल नहीं पाया। उसकी माँ ने पलंग पर ही उसे गरम टमाटर का सूप परोसा जिससे वो सुबह उठकर तंदुरुस्त हो जाए ।

बाकी बच्चों को, यानी सोनू, मोनू और टीनू को, एक बढ़िया भोजन खाने मिला जैसे गाजर का हलवा, आलू के पकोड़े, कुछ कच्चे खीरे, मीठी पेस्ट्रियां, इत्यादि ।

समाप्त।